लोकनायक श्री जयप्रकाश नारायण के निधन पर प्रधानमंत्री श्री चरण सिंह का शोक सन्देश

दिनांक :8 / 10 / 1979
स्थान : दिल्ली

लोकनायक जयप्रकाश नारायण के निधन से सारा राष्ट्र स्तब्ध रह गया है। महात्मा गांधी की मृत्यु के बाद राष्ट्र का नैतिक और आध्यात्मिक नेतृत्व उन्होंने ही संभाला था। ये उत्तरदायित्व अपने जीवन के अंतिम क्षण तक वे निभाते रहे। हमारी जनता की चेतना जागृत करने में उनके योगदान अनेक हैं। विदेशी हुकूमत के खिलाफ युवा क्रांति की भावना का प्रतिनिधित्व करते हुए आगे चलकर वो गरीब, पददलित और शोषित लोगों के मसीहा बन गये। यद्यपि वो सत्ता से दूर रहे। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद उन्होंने स्वतंत्रता और वैयक्तिक स्वाधीनता की मशाल को बराबर जलाये रखा। गांधीवाद के प्रति उनका पूर्ण समर्पण उस समय प्रकट हुआ, जबकि उन्होंने सक्रिय राजनीति से अलग होकर भूदान आन्दोलन में अपनी सारी शक्ति लगा दी थी। लेकिन जब लोकतांत्रिक स्वतंत्रता की ज्योति बुझने लगी, तब उस समय जनता का नेतृत्व करने से वो पीछे नहीं हट। उनके प्रयास से एक दूसरा स्वतंत्रता आन्दोलन छिड़ा और मार्च 77 में भारत एक बार फिर वैयक्तिक स्वतंत्रता और लोकतंत्र के प्रकाश–स्तम्भ के रूप में उभरा। जबकि वो यह ऐतिहासिक संघर्ष कर रहे थे, वो एक ऐसी बीमारी से जूझ रहे थे जो किसी भी व्यक्ति के लिए घातक सिद्ध होती। उनकी क्षति अपूर्णीय है। लेकिन उनका संदेश सदैव हमेशा आकाशदीप की तरह ऊंचे आदर्श और निष्ठा की ओर हमें प्रेरित करता रहेगा।

प्रभु से मेरी प्रार्थना है कि वो उनकी दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करे। जनसेवा के क्षेत्र में ईमानदारी का सूरज डूब तो गया है परन्तु हमें आशा रखनी चाहिए कि अंधेरा फिर नहीं आयेगा।

————0————